Toppersnotes®
Unleash the topper in you

Haryana

Group - C

Jail Warder (Group - 2)

भाग - 5

हरियाणा की अर्थव्यवस्था एवं ग्रामीण विपणन

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	हरियाणा की भौगोलिक संरचना	1
2	हरियाणा की जलवायु	10
3	हरियाणा में अपवाह तंत्र	16
4	हरियाणा की झीलें एवं तालाब	26
5	हरियाणा का जनसांख्यिकीय प्रोफ़ाइल	30
6	हरियाणा में सिंधु घाटी सभ्यता	34
7	सल्तनत काल के दौरान हरियाणा	42
8	मुग़ल साम्राज्य और हरियाणा (1526–1707 ई.)	47
9	उत्तर मुगल काल और हरियाणा	52
10	हरियाणा में 1857 का विद्रोह	56
11	राज्यपाल	63
12	मुख्यमंत्री और राज्य मंत्रिपरिषद्	70
13	राज्य विधानमंडल	73
14	उच्च न्यायालय	82
15	स्थानीय स्वशासन एवं पंचायती राज	89
16	हरियाणा के संवैधानिक निकाय	101
17	हरियाणा के गैर–संवैधानिक निकाय	106
18	हरियाणा में चित्रकला एवं कला	113
19	हरियाणा का हस्तशिल्प कला	115
20	हरियाणा का लोक संगीत और नृत्य	117
21	हरियाणा की वास्तुकला	125
22	हरियाणा के किले एवं स्मारक	130
23	हरियाणा के मेले और त्यौहार	134

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	हरियाणा की अर्थव्यवस्था और संभावनाएँ	139
25	जनसंख्या, स्वास्थ्य और पोषण तथा घटता लिंगानुपात	145
26	हरियाणा में कृषि	147
27	ग्रामीण ऋणग्रस्तता एवं नाबार्ड	151
28	MSME एवं राज्य सरकार	156
29	विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) एवं हरियाणा में बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ	159
30	HSIIDC, HFC, HAFED और HKVIB की भूमिका	165
31	हरियाणा में ग्रामीण विपणन	175
32	हरियाणा बजट 2026–27	196
33	हरियाणा आर्थिक सर्वेक्षण 2025–26	202
34	यातायात नियम, सड़क संकेत एवं मोटर वाहन अधिनियम	207

1 CHAPTER हरियाणा की भौगोलिक संरचना

हरियाणा भारत का सबसे छोटा स्थलरुद्ध राज्य है, जो देश के उत्तर-पश्चिमी हिस्से में स्थित है। यह असमतल चतुर्भुज आकार वाला राज्य है और इसमें अद्वितीय भौगोलिक विशेषताएँ पाई जाती हैं। यह राज्य कर्क रेखा से लगभग 300 मील तथा अरब सागर से लगभग 994.19 मील की दूरी पर स्थित है।

हरियाणा का परिचय

विशेषता	विवरण
स्थान	उत्तर-पश्चिमी भारत और सिंधु मैदान के दक्षिणी भाग में
हरियाणा की लंबाई और चौड़ाई	➢ उत्तर-दक्षिण लंबाई: 363.31 किमी ➢ पूर्व-पश्चिम चौड़ाई: 350.61 किमी.
जिला, ब्लॉक और गांव	➢ 22 जिले, 140 ब्लॉक, 7356 गांव
कुल क्षेत्रफल	44,212 वर्ग किमी (भारत का 1.34%) कुल क्षेत्रफल (राज्य और केंद्रशासित प्रदेश सहित) के मामले में यह 21वें स्थान पर है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह 20वाँ राज्य है
सबसे बड़े और सबसे छोटे जिले (क्षेत्रफल के अनुसार)	➢ सबसे बड़े - सिरसा (4,277 वर्ग किमी) इसके बाद हिसार, भिवानी, जिंद और फतेहाबाद हैं। ➢ सबसे छोटा - फरीदाबाद (741 वर्ग किमी) उसके बाद पंचकूला, गुरुग्राम, पानीपत और पलवल। संकेत - सिरसा बहुत बड़ा है जबकि फरीदाबाद बहुत छोटा है।
पड़ोसी राज्य और केंद्र शासित प्रदेश	➢ 5 राज्य → पंजाब, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश और राजस्थान ➢ 2 केंद्र शासित प्रदेश → दिल्ली और चंडीगढ़। ➢ हरियाणा की सबसे लंबी सीमा राजस्थान (लगभग 1262 किमी) के साथ और सबसे छोटी सीमा उत्तराखंड (लगभग 12 किमी) के साथ लगती है।

हरियाणा में चरम बिंदु	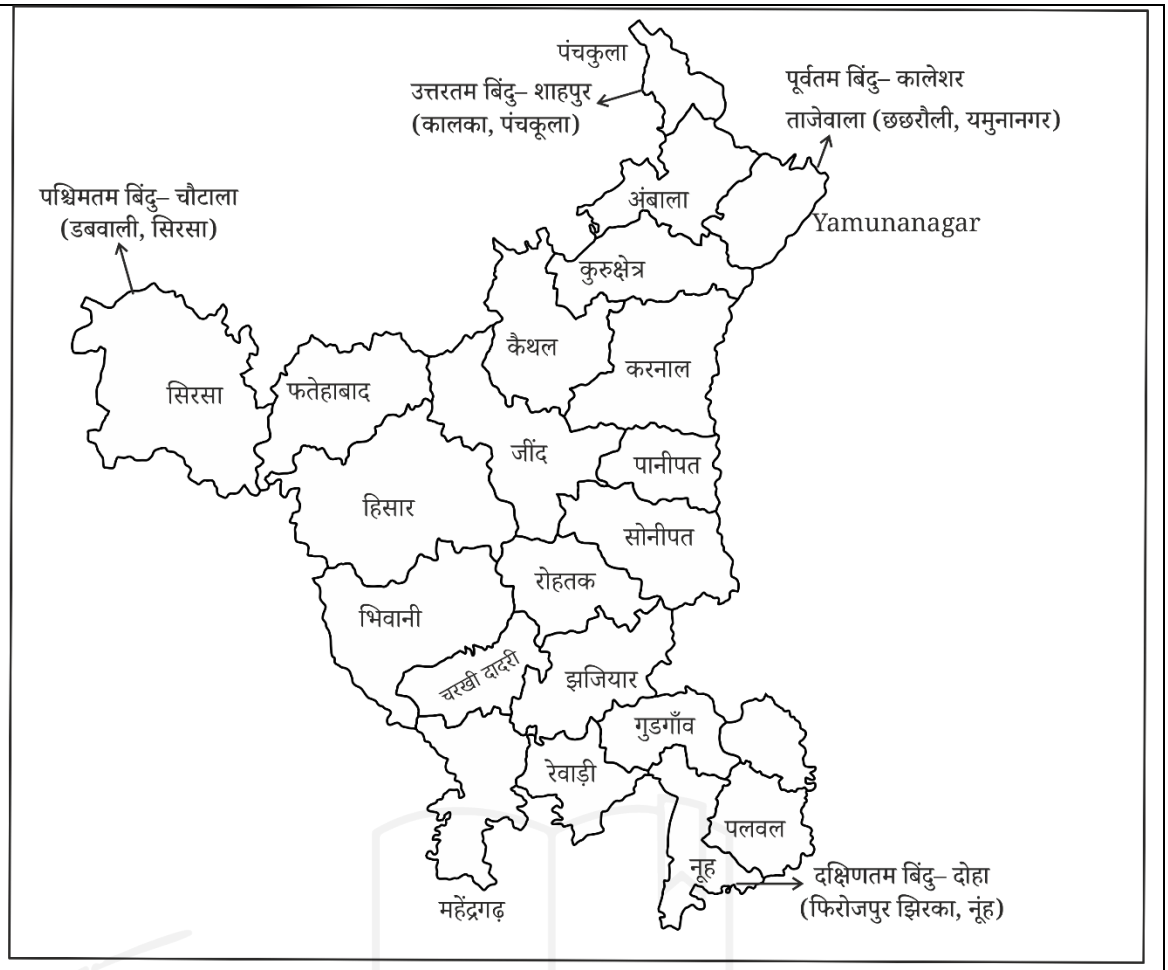

क्या आप जानते हैं?

हरियाणा को पार करने में सूर्य की किरणों को 12 मिनट 32 सेकंड का समय लगता है।

हरियाणा के अक्षांश और देशांतर

अक्षांश और देशांतर एक समन्वय प्रणाली बनाते हैं, जो पृथ्वी पर किसी भी स्थान को सटीक रूप से निर्धारित करने में मदद करती है। अक्षांश यह मापता है कि कोई स्थान भूमध्य रेखा से कितना उत्तर या दक्षिण में है, जबकि देशांतर यह दर्शाता है कि कोई स्थान प्रधान मध्यान्ह रेखा से कितना पूर्व या पश्चिम में स्थित है। इन दोनों निर्देशांकों के संयोजन से ग्रह की सतह पर किसी भी स्थान की सटीक पहचान की जा सकती है।

अक्षांश (Latitudes)	देशांतर (Longitudes)
27°39’ उत्तरी अक्षांश से 30°55’ उत्तरी अक्षांश	74°27’ पूर्वी देशांतर से 77°36’ पूर्वी देशांतर
अक्षांशीय विस्तार: 3°16’	देशांतर विस्तार: 3°8’
➢ 29° उत्तरी अक्षांश से अधिकतम जिले गुजरते हैं: 4 जिले – हिसार, भिवानी, रोहतक, सोनीपत।	➢ 77° पूर्वी देशांतर से अधिकतम जिले गुजरते हैं: 8 जिले – पंचकूला, अंबाला, कुरुक्षेत्र, करनाल, पानीपत, सोनीपत, गुरुग्राम, नूंह। ➢ 75° पूर्वी देशांतर केवल सिरसा जिले से गुजरता है।
नोट :- सोनीपत हरियाणा का एकमात्र जिला है, जिसका मुख्यालय 29° उत्तरी अक्षांश और 77° पूर्वी देशांतर पर स्थित है।	

हरियाणा के पड़ोसी राज्य एवं केंद्र शासित प्रदेश

राज्य/केंद्र शासित प्रदेश	विशेषताएँ
राजस्थान (दक्षिण-पश्चिम)	➢ हरियाणा के 7 जिले राजस्थान के 8 जिलों से लगते हैं। (पहले 7 थे, राजस्थान में नए जिले बनने के बाद संख्या बदली)। ➢ हरियाणा के जिले: नूंह, रेवाड़ी, महेंद्रगढ़, भिवानी, हिसार, फतेहाबाद, सिरसा। ➢ महेंद्रगढ़ तीन तरफ से राजस्थान से घिरा हुआ है। ➢ सिरसा राजस्थान से सबसे लंबी सीमा साझा करता है। ➢ फतेहाबाद राजस्थान से सबसे छोटी सीमा साझा करता है।
पंजाब (उत्तर-पश्चिम)	➢ हरियाणा के 7 जिलों की सीमा पंजाब के 6 जिलों से लगती है ➢ हरियाणा के जिले: सिरसा, फतेहाबाद, जिंद, कैथल, कुरूक्षेत्र, अंबाला, पंचकुला ➢ पंजाब के साथ सबसे लम्बी सीमा सिरसा है ➢ पंजाब के साथ सबसे छोटी सीमा कुरूक्षेत्र है
हिमाचल प्रदेश (उत्तर-पूर्वी)	➢ हरियाणा के 3 जिलों की सीमा हिमाचल प्रदेश के 2 जिलों से लगती है। ➢ हरियाणा के जिले: पंचकुला, अंबाला, यमुनानगर ➢ हिमाचल प्रदेश के साथ सबसे लंबी सीमा पंचकुला है। ➢ हिमाचल प्रदेश के साथ सबसे छोटी सीमा अंबाला की है।
उत्तराखंड (उत्तर-पूर्वी)	➢ हरियाणा का 1 जिला (यमुनानगर) की सीमा उत्तराखंड के केवल एक जिले (देहरादून) से लगती है। ➢ उत्तराखंड एकमात्र राज्य है जो हरियाणा के साथ (यमुना नदी के साथ) पूरी तरह से जल-आधारित सीमा साझा करता है। ➢ हरियाणा उत्तराखंड के साथ सबसे छोटी सीमा साझा करता है (लगभग 12 किमी)
उत्तर प्रदेश (पूर्व)	➢ हरियाणा के 7 जिलों की सीमा उत्तर प्रदेश के 6 जिलों से लगती है। ➢ हरियाणा के जिले: यमुनानगर, करनाल, पानीपत, सोनीपत, फरीदाबाद, पलवल, नूंह। ➢ उत्तर प्रदेश की सबसे लम्बी सीमा - करनाल ➢ उत्तर प्रदेश के साथ सबसे छोटी सीमा - नूंह
दिल्ली (दक्षिण-पूर्व)	➢ हरियाणा दिल्ली को तीन तरफ से (पूर्वी दिशा को छोड़कर) घेरता है। ➢ हरियाणा के 4 जिले दिल्ली के साथ सीमा साझा करते हैं। ➢ ये हैं सोनीपत, झज्जर, गुरुग्राम, फ़रीदाबाद ➢ दिल्ली के साथ सबसे लम्बी सीमा गुरूग्राम है। ➢ दिल्ली के साथ सबसे छोटी सीमा फरीदाबाद की है।
चंडीगढ़	➢ (उत्तर-पूर्व) पंचकुला हरियाणा का एकमात्र जिला है जिसकी सीमा चंडीगढ़ से लगती है।

कई राज्यों की सीमा से लगे जिले

3 राज्यों की सीमा से लगे जिले	➢ यमुनानगर: इसकी सीमा हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश से लगती है। (3 राज्य)
दो राज्यों की सीमा से लगे जिले	➢ फ़तेहाबाद और सिरसा: राजस्थान और पंजाब के साथ सीमाएँ साझा करते हैं। ➢ अंबाला और पंचकुला: पंजाब और हिमाचल प्रदेश के साथ साझा सीमाएँ। ➢ नूंह: राजस्थान और उत्तर प्रदेश से सीमा साझा करता है। नोट: पंचकुला की सीमा 2 राज्यों और 1 केंद्र शासित प्रदेश चंडीगढ़ से लगती है
स्थलरुद्ध जिले	➢ रोहतक और चरखी दादरी की सीमा किसी अन्य राज्य या केंद्रशासित प्रदेश के साथ नहीं लगती है।

जिलों के बीच सीमाएँ

सर्वाधिक सीमावर्ती जिलों वाले जिले	➢ जिंद - 7 जिलों (सर्वोच्च) की सीमाएँ: फतेहाबाद, हिसार, रोहतक, सोनीपत, पानीपत, करनाल, कैथल ➢ रोहतक: छह जिलों की सीमाएँ:हिसार,भिवानी,चरखी दादरी,झज्जर,सोनीपत,और जिंद। ➢ चरखी दादरी, रेवाडी और गुरूग्राम पांच जिलों की सीमा साझा करते हैं
एक सीमावर्ती जिले वाले जिले	➢ हरियाणा में केवल 2 जिले ऐसे हैं जिनकी सीमा केवल एक ही जिले से लगती है। ➢ सिरसा: केवल फतेहाबाद के साथ सीमा साझा करता है। ➢ पंचकुला: केवल अंबाला के साथ सीमा साझा करता है।

क्या आप जानते हैं?

काउंटर-मैग्नेट सिटी शहरी केंद्र हैं जिन्हें दिल्ली के राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) पर जनसंख्या दबाव को कम करने के लिए वैकल्पिक विकास केंद्र के रूप में विकसित करने के लिए पहचाना जाता है। हरियाणा में, शहरों को काउंटर-मैग्नेट क्षेत्र के रूप में नामित किया गया है हिसार और अम्बाला.

भूगर्भिक संरचना

एज़ोइक और पेलियोज़ोइक युग के दौरान, हरियाणा की भूगर्भीय संरचना में अधिक बदलाव नहीं आया। हालांकि, मेसोज़ोइक युग में महत्वपूर्ण भूवैज्ञानिक परिवर्तन हुए। सीनोज़ोइक युग में प्रमुख भौगोलिक संरचनाएँ, जैसे कि नदियाँ और पहाड़, अस्तित्व में आईं। कर्नल एम. एल. गिल भार्गव के अनुसार, प्राचीन काल में हरियाणा के दक्षिणी भाग की सीमाएँ समुद्रों से लगी हुई थीं—पश्चिम में सरस्वत सागर और पूर्व में अखावत सागर। समय के साथ, इन समुद्री तटों ने पीछे हटना शुरू किया और भूमि उभरकर सामने आई। भार्गव ने यह भी उल्लेख किया कि आज जो अरावली पहाड़ियाँ नीची दिखाई देती हैं, वे पहले कहीं अधिक ऊँची थीं और बर्फ से ढकी हुई थीं। कई नदियाँ इन्हीं पहाड़ियों से निकलती थीं। इसके अलावा, हरियाणा का प्राचीन जलवायु आज की तुलना में काफी भिन्न था, और यहाँ वर्षा भी अधिक हुआ करती थी।

हरियाणा का भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर विभाजन

हरियाणा को तीन प्रमुख भौगोलिक क्षेत्रों में विभाजित किया गया है:

1. कुरुक्षेत्र क्षेत्र (Kurukshetra Region)

- निर्देशांक (Coordinates): 28°30' से 30° उत्तर अक्षांश और 76°21' से 77° पूर्व देशांतर
- शामिल जिले: करनाल और जींद के पूर्वी भाग
- मुख्य नदी: चौतांग नदी इस क्षेत्र से होकर बहती है।

2. हरियाणा क्षेत्र (Haryana Region)

- निर्देशांक (Coordinates): 29°30' से 30° उत्तर अक्षांश
- शामिल जिले: फतेहाबाद, हिसार, भिवानी और रोहतक
- मुख्य विशेषता: यह क्षेत्र मुख्य रूप से जाटों की अधिक जनसंख्या के कारण "जाटियात क्षेत्र" के रूप में जाना जाता है।

3. भटियाना क्षेत्र (Bhattiana Region)

- स्थान: फतेहाबाद और भट्टू तहसीलों के बीच स्थित
- इतिहास: इस क्षेत्र में ऐतिहासिक रूप से भट्टी राजपूतों का वर्चस्व रहा है।

हरियाणा की भौगोलिक स्थिति

हरियाणा मुख्य रूप से समतल जलोढ़ मैदानों (Alluvial Plains) से मिलकर बना है, जो घग्गर और यमुना नदियों के बीच स्थित हैं। राज्य के लगभग 93.76% क्षेत्र में ये समतल और लहरदार मैदान फैले हुए हैं, जिन्हें घग्गर-यमुना मैदान कहा जाता है। इन मैदानों की ऊँचाई समुद्र तल से 200 से 300 मीटर तक होती है। ये मैदान हजारों वर्षों तक हिमालयी नदियों द्वारा लाई गई अवसाद (sediments) से बने हैं, और यहाँ की भूमि का सामान्य ढलान उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर है।

हरियाणा के पहाड़ी क्षेत्र

- शिवालिक पहाड़ियाँ – हरियाणा के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित हैं (पंचकूला जिला)।
- अरावली की अवशेष पहाड़ियाँ – राज्य के दक्षिणी भाग में स्थित हैं (फरीदाबाद, गुरुग्राम, रेवाड़ी, नूंह और महेंद्रगढ़ जिले)।

हरियाणा के प्राकृतिक स्थलाकृतिक (Topographic) विभाजन

1. हरियाणा सरकार की आधिकारिक वेबसाइट के अनुसार, राज्य को पाँच प्राकृतिक स्थलाकृतिक भागों में विभाजित किया जा सकता है:

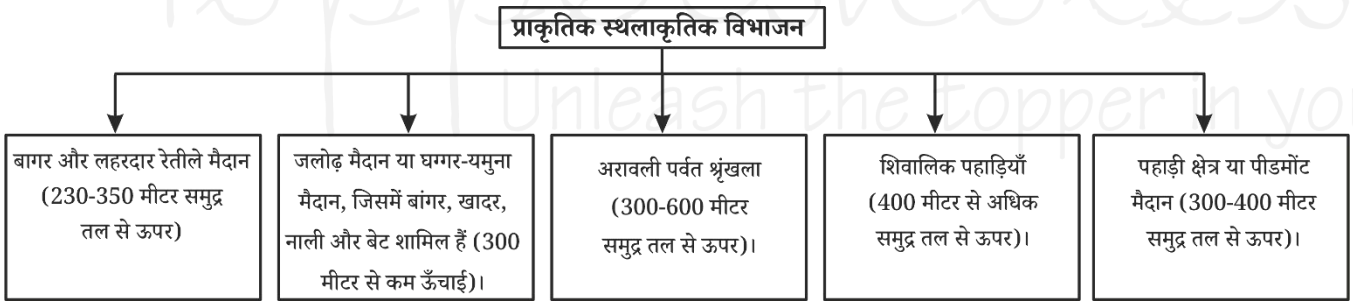

2. डॉ. जसबीर सिंह ने अपनी पुस्तक "हरियाणा की कृषि भूगोल" में हरियाणा को आठ प्राकृतिक भागों में विभाजित किया है:

- शिवालिक पहाड़ियाँ (Shivalik Hills)
- पिडमोंट मैदान (Piedmont Plains)
- जलोढ़ मैदान (Alluvial Plains)
- बाढ़ क्षेत्र (Flood Plains)
- रेत के टीलों वाले मैदान (Plains with Sand Dunes)
- अरावली पहाड़ियों के पथरीले मैदान (Rocky Plains of Aravalli Hills)
- लहरदार रेतीले मैदान (Undulating Sand Plains)
- दलदली भूमि (Marshy Lands)

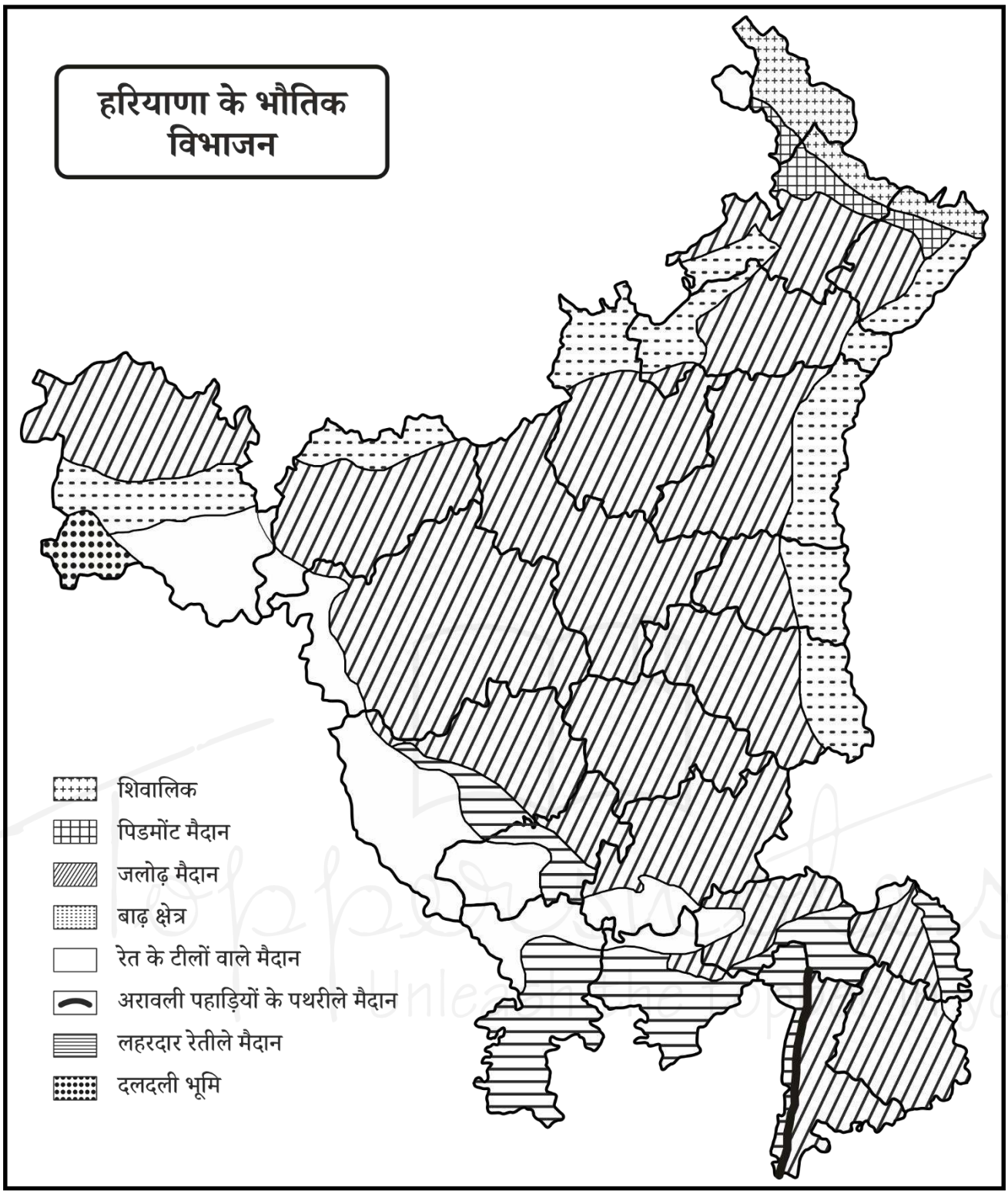

1. शिवालिक पहाड़ियाँ (बाहरी हिमालय)

- स्थान और विस्तार (Location and Extent)
  - ✓ शिवालिक पहाड़ियाँ हरियाणा के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित हैं और पंचकूला, अंबाला और यमुनानगर जिलों में फैली हुई हैं।
  - ✓ ये हरियाणा के कुल क्षेत्रफल का लगभग 1.67% भाग घेरती हैं, इनकी ऊँचाई 900 से 1200 मीटर तक होती है।
- विशेषताएँ (Features
  - ✓ शिवालिक पर्वतमाला उत्तर-प्लियोसीन युग के दौरान बनी सबसे युवा हिमालयी पर्वतमाला है।
  - ✓ शिवालिक पहाड़ियों को ऊंचाई के आधार पर ऊपरी शिवालिक पहाड़ियों (600 मीटर से ऊपर) और निचली शिवालिक पहाड़ियों (400-600 मीटर) में वर्गीकृत किया गया है।

- ✓ इन पहाड़ियों से घग्गर, मारकंडा, सरस्वती सहित कई नदियाँ निकलती हैं, जो खड़ी ढलानों के कारण उच्च कटाव में योगदान करती हैं।
- ✓ इस क्षेत्र में हरियाणा में सबसे अधिक वर्षा होती है और यहां साल, चीड़, देवदार और खैर के पेड़ों से युक्त घने सदाबहार जंगल हैं।
- ✓ मोरनी पहाड़ियाँ जो हरियाणा की सबसे ऊँची पहाड़ियाँ हैं, ऊपरी शिवालिक श्रेणियों का हिस्सा हैं। वे हरियाणा का एकमात्र हिल स्टेशन हैं। मोरनी पहाड़ियों का उच्चतम बिंदु करोह शिखर (1,467 मीटर) है।
- ✓ टिपरा पहाड़ियाँ घग्गर नदी के उत्तर में स्थित हैं, जो टिपरा हिल्स और मोरनी हिल्स के बीच एक प्राकृतिक सीमा के रूप में कार्य करती है।
- ✓ मोरनी हरियाणा की पहली आरोग्यम मोटरसाइकिल एम्बुलेंस सेवा (2017) और मिल्खा सिंह के नाम पर फ्लाइंग सिख एडवेंचर स्पोर्ट्स हब (टिक्कर ताल, मोरनी) का भी घर है।

2. पीडमोंट मैदान (भाबर क्षेत्र)

- ➢ स्थान और विस्तार
  - ✓ यह क्षेत्र शिवालिक पहाड़ियों के दक्षिण में और हरियाणा के पूर्वोत्तर क्षेत्र में स्थित है।
  - ✓ ये मैदान यमुना नदी से घग्गर नदी तक 25 किमी चौड़ी पट्टी के रूप में फैले हुए हैं, जो यमुनानगर, अंबाला और पंचकुला जिलों को कवर करते हैं।
- ➢ विशेषताएं
  - ✓ शिवालिक पहाड़ियों और मैदानों के बीच एक संक्रमणकालीन क्षेत्र के रूप में कार्य करता है।
  - ✓ स्थानीय तौर पर इसे नारायणगढ़ (अंबाला) में 'घर' और जगाधरी (यमुनानगर) में 'कांधी' कहा जाता है।
  - ✓ समुद्र तल से ऊंचाई 300-375 मीटर के बीच है।
  - ✓ इस क्षेत्र की विशेषता गहरी नालियां (स्थानीय रूप से 'चो' कहलाती हैं) हैं, जो वर्षा आधारित जलधाराओं द्वारा निर्मित होती हैं।
  - ✓ घग्गर और मारकंडा जैसी प्रमुख नदियाँ इस क्षेत्र से होकर बहती हैं।
  - ✓ ये नदियाँ रेत, गाद, बजरी, कंकड़ और पत्थर ले जाती हैं जो पीडमोंट मैदानों में जमा हो जाते हैं जिसके कारण जलोढ़ पंखे का निर्माण होता है।
  - ✓ इस क्षेत्र की मिट्टी खुरदरी बनावट और तीव्र जल निकासी के कारण कम उपजाऊ या अनुपजाऊ है।
  - ✓ इस क्षेत्र में हरियाणा में सबसे अधिक जल-प्रेरित मिट्टी का कटाव होता है।

3 .जलोढ़ मैदान (बैंगर क्षेत्र)

- ➢ स्थान और विस्तार
  - ✓ ये मैदान पीडमोंट क्षेत्र से लेकर यमुना और घग्गर नदियों के बीच अरावली तक फैले हुए हैं। इन मैदानों को भांगर कहा जाता है और यह पुरानी जलोढ़ मिट्टी से बने होते हैं जो अत्यधिक उपजाऊ होती हैं।
  - ✓ यह अंबाला, यमुनानगर, कैथल, करनाल, कुरूक्षेत्र, पानीपत, सोनीपत, रोहतक, जिंद, हिसार, फतेहाबाद, सिरसा, गुड़गांव और फरीदाबाद सहित कई जिलों में फैला हुआ है।
- ➢ विशेषताएं
  - ✓ इस क्षेत्र में उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम तक हल्की ढलान है।
  - ✓ इस क्षेत्र की ऊंचाई 220 से 300 मीटर (700 से 900 फीट) के बीच है।
  - ✓ इस क्षेत्र में मारकंडा, सरस्वती और चौतांग जैसी नदियाँ हैं।

4. बाढ़ क्षेत्र

- स्थान और विशेषताएं
  - ✓ बाढ़ के मैदान हरियाणा के पूर्वी और उत्तर-पश्चिमी भागों में पाए जाते हैं।
  - ✓ पूर्वी क्षेत्र में, मैदान लहरदार हैं और इनमें घाटी मार्ग और दलदली क्षेत्र एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। इन मैदानों का निर्माण यमुना नदी और उसकी सहायक नदियों के तलछट के जमाव से हुआ है, जो यमुनानगर से फ़रीदाबाद तक बहती हैं।
  - ✓ राज्य के उत्तर-पश्चिमी भाग में, घग्गर और मारकंडा नदियों ने तलछट जमा कर बाढ़ के मैदानों का निर्माण किया है, जिन्हें स्थानीय रूप से नैली और बेट के नाम से जाना जाता है।

5. रेत के टीलों का मैदान

- गठन और स्थान
  - ✓ इन मैदानों का निर्माण राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्रों से गर्म, शुष्क हवाओं द्वारा लाई गई रेत के जमाव से हुआ है।
  - ✓ ये मैदान हरियाणा के दक्षिण-पश्चिमी भाग में, राजस्थान की सीमा पर पाए जाते हैं।
  - ✓ प्रमुख जिलों में सिरसा, हिसार, भिवनी, महेंद्रगढ़, रेवारी और झज्जर शामिल हैं।
- विशेषताएं
  - ✓ रेत के टीलों के बीच निचले इलाकों का निर्माण होता है जिन्हें "ताल" के नाम से जाना जाता है।
  - ✓ मानसून के दौरान, ये ताल पानी से भर जाते हैं, जिससे अस्थायी उथली झीलें बन जाती हैं जिन्हें "थूथ" या "बावड़ी" कहा जाता है।
  - ✓ रेत के टीलों के स्थानांतरण को रोकने के लिए वृक्षारोपण के माध्यम से हरित पट्टी स्थापित की गई है।
  - ✓ इस क्षेत्र में भूमिगत जल गहरा एवं खारा है।

6. अरावली पहाड़ियों का चट्टानी मैदान

- स्थान और विस्तार:
  - ✓ ये मैदान राजस्थान में अरावली पहाड़ियों का हिस्सा हैं और हरियाणा के दक्षिणी भाग में स्थित हैं।
  - ✓ गुरुग्राम, फरीदाबाद, रेवाड़ी, मेवात, भिवानी और महेंद्रगढ़ जिलों में पाए जाते हैं।
- स्थलाकृति और विशेषताएं:
  - ✓ समुद्र तल से औसत ऊंचाई 225 से 500 मीटर तक है।
  - ✓ मैदान अरावली पर्वतमाला की नीची, टूटी और बिखरी हुई अवशिष्ट पहाड़ियों से ऊबड़-खाबड़ हैं।
  - ✓ अर्ध-शुष्क रेतीले क्षेत्र में हवा के कटाव से आकार लेने वाली नंगी, कठोर और गोल चट्टानें मौजूद हैं।
  - ✓ इस क्षेत्र में कम वर्षा होती है, जिससे केवल कंटीली झाड़ियाँ और विरल पेड़ ही उगते हैं।
  - ✓ सौर विकिरण के कारण चट्टानें टूटती रहती हैं, जिससे तलहटी में अत्यधिक चट्टानी मलबा जमा हो जाता है।
  - ✓ दिल्ली रिज - अरावली की एक शाखा जो हरियाणा से दिल्ली तक फैली हुई है। दिल्ली में यह धौला कुआँ से करोल बाग होते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय तक चलती है।

क्या आप जानते हैं?

अरावली पर्वतमाला दुनिया की सबसे पुरानी वलित पर्वत श्रृंखलाओं में से एक है। यह गुजरात, राजस्थान, हरियाणा और दिल्ली तक फैली हुई है।

7. लहरदार रेत के टीले

- गठन एवं वितरण
  - ✓ इन मैदानों का निर्माण हवाओं द्वारा रेत के जमाव के कारण हुआ है।
  - ✓ मुख्य रूप से हरियाणा के दक्षिणी भाग में मुख्य रूप से महेंद्रगढ़, रेवाड़ी और गुरुग्राम में पाया जाता है।
- भौगोलिक विशेषताएं
  - ✓ मैदानों की विशेषता उनके बीच कटक (ऊंचे क्षेत्र) और गर्त (गड्ढे) हैं। बरसात के मौसम में, पानी गर्तों में भर जाता है।
  - ✓ इन मैदानों में रेत के अलावा कंकड़युक्त जलोढ़ मिट्टी भी जमा है।

8. असंगठित दलदली भूमि

- स्थान और ऊंचाई
  - ✓ हरियाणा के पश्चिमी क्षेत्र सिरसा में दलदली भूमि पाई जाती है।
  - ✓ समुद्र तल से 200 मीटर से भी कम ऊंचाई पर स्थित होने के कारण यह क्षेत्र राज्य में सबसे कम ऊंचाई वाला है।
- गठन और विशेषताएं
  - ✓ जल प्रवाह में रुकावट के कारण दलदल विकसित हो गया, जिससे जलभराव हो गया।
  - ✓ सिरसा का नैली क्षेत्र चौड़ा और उथला है, जिसमें हल्की ढलान है, जो दलदली भूमि के निर्माण में योगदान करती है।

हरियाणा में प्रमुख पहाड़ियाँ और ऊँचाई:

पहाड़ियाँ और ऊँचाइयाँ	विवरण
धोसी पहाड़ी	➢ हरियाणा में अरावली पर्वतमाला का उच्चतम बिंदु कुलताजपुर गांव (नारनौल, महेंद्रगढ़) में स्थित है। ➢ धोसी पहाड़ी एक विलुप्त ज्वालामुखी है।
तोशाम पहाड़ी खनक पहाड़ी दादम हिल रिवासा हिल	➢ भिवानी में स्थित है। ➢ तोशाम पहाड़ी एक विलुप्त ज्वालामुखी है।
इंदौरी पहाड़ी कोटला पहाड़ी	➢ मेवात (नूह) में पाया जाता है।
कलियाणा पहाड़ी कपूरी पहाड़ी	➢ चरखी दादरी में स्थित है।
मेवात पहाड़ी	➢ हरियाणा में अरावली श्रेणी के दक्षिणी भाग का स्थानीय नाम।
टांकरी पहाड़ी	➢ रेवाडी में स्थित है।
मंगरबानी पहाड़ी	➢ गुरुग्राम में स्थित है।
सोहना पहाड़ी ग्वाल पहाड़ी	➢ फरीदाबाद में स्थित है।

किसी राज्य का भूगोल उसके विकास से संबंधित एक महत्वपूर्ण कारक है और हरियाणा का भूगोल उसके विकास और समृद्धि के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करता है, चाहे वह जनसांख्यिकीय, सामाजिक या आर्थिक हो।

2 CHAPTER हरियाणा की जलवायु

विश्लेषण: हरियाणा की विभिन्न परीक्षाओं में जलवायु पर पिछले वर्ष के प्रश्नों से पता चलता है कि इस अध्याय का बार-बार संदर्भ दिया गया है। अधिकांश प्रश्न तथ्यात्मक प्रकृति के होते हैं, जिनमें से कुछ में वैचारिक समझ की आवश्यकता होती है। पुस्तक का गहन अध्ययन करके और संबंधित मानचित्रों की उचित समझ प्राप्त करके इन प्रश्नों का प्रभावी ढंग से उत्तर दिया जा सकता है।

जलवायु किसी विशेष क्षेत्र में दीर्घकालिक मौसम संबंधी परिस्थितियों, जैसे तापमान, आर्द्रता, वर्षा, हवा और दबाव के स्वरूपों को संदर्भित करती है। भारत सामान्यतः उष्णकटिबंधीय मानसूनी जलवायु वाला देश है, और हरियाणा भी इसी जलवायु क्षेत्र में आता है। हालांकि, समुद्र से काफी दूर स्थित होने के कारण हरियाणा की जलवायु उप-उष्णकटिबंधीय शुष्क महाद्वीपीय प्रकार की है। राज्य का उत्तरी भाग, जो हिमाचल प्रदेश से सटा हुआ है, में अर्ध-आर्द्र जलवायु पाई जाती है, जबकि दक्षिणी भाग, जो राजस्थान की सीमा से जुड़ा है, में शुष्क जलवायु पाई जाती है।

कुल मिलाकर, हरियाणा की जलवायु को एक संक्रमण क्षेत्र के रूप में वर्णित किया जा सकता है, जो पूर्वी राजस्थान की अर्द्ध-शुष्क जलवायु और गंगा के मैदानी क्षेत्रों की अधिक आर्द्र जलवायु के बीच स्थित है। यह विशिष्ट जलवायु राज्य की मौसम संबंधी परिस्थितियों और कृषि गतिविधियों को प्रभावित करती है।

हरियाणा की जलवायु की विशेषताएं

हरियाणा समुद्र से दूर होने के कारण उप-उष्णकटिबंधीय शुष्क महाद्वीपीय जलवायु अनुभव करता है।

1. हवा

- गर्मियों में हरियाणा में राजस्थान के रेगिस्तानी इलाकों से चलने वाली गर्म, शुष्क हवाएँ प्रभावी होती हैं जिन्हें **"लू"** कहा जाता है, ये हवाएँ तापमान को बढ़ाकर गर्मी की तीव्रता को बढ़ाती हैं।
- सर्दियों में ठंडी हवाएँ चलती हैं, जो अक्सर कोहरे के साथ होती हैं, विशेष रूप से राज्य के उत्तरी और पूर्वी भागों में।

2. आर्द्रता

- गर्मियों में आर्द्रता कम होती है, जिससे वाष्पीकरण की दर बढ़ जाती है और मिट्टी में नमी की मात्रा कम हो जाती है।
- सर्दियों में आर्द्रता अधिक होती है, जिससे ठंड और नमी बढ़ जाती है, खासकर कोहरे वाले दिनों में।

3. वर्षा

- हरियाणा में सामान्य वर्षा होती है, जिसकी वार्षिक औसत मात्रा क्षेत्र के अनुसार **300 से 1100 मिमी** के बीच होती है।
- मुख्य रूप से वर्षा का स्रोत **मानसूनी वर्षा- बंगाल की खाड़ी से आने वाला दक्षिण पक्षिम मानसून (जून से सितंबर)** है, जिसमें **जुलाई और अगस्त सबसे अधिक वर्षा वाले महीने** होते हैं।

4. वाष्पीकरण

- गर्मी के महीनों में उच्च तापमान और कम आर्द्रता के कारण अत्यधिक वाष्पीकरण होता है।

5. जलवायु क्षेत्र

- हरियाणा की जलवायु **अर्ध-शुष्क (सेमी-एरिड) और आर्द्र उपोष्णकटिबंधीय (ह्यूमिड सबट्रॉपिकल) क्षेत्रों** का मिश्रण है।
- **उत्तर भाग** में अधिक नमी और मध्यम तापमान पाया जाता है, जबकि **दक्षिण क्षेत्र** में अधिक गर्मी, शुष्क परिस्थितियाँ और कम वर्षा होती है।
- पश्चिमी भाग की जलवायु **अर्ध-शुष्क** होती है, जबकि पूर्वी भाग की ओर बढ़ते हुए जलवायु **अधिक आर्द्र** हो जाती है।

क्या आप जानते हैं?

औसत ग्रीष्मकालीन तापमान	लगभग 35°C
औसत शीतकालीन तापमान	लगभग 12°C - 14°C
सबसे ठंडे महीने	जनवरी और दिसंबर
सबसे गर्म महीने	मई और जून

जिलेवार जलवायु विशेषताएँ:

जलवायु विशेषता	जिला
सबसे शुष्क	**महेंद्रगढ़** (अत्यंत कम वर्षा के साथ शुष्क परिस्थितियाँ)
सबसे आर्द्र	**पंचकूला** ,पहाड़ों के नजदीक होने के कारण राज्य में सबसे अधिक आर्द्रता |
सबसे गर्म जिला	**हिसार**
सबसे ठंडा जिला	**हिसार**
सबसे अधिक धूप वाला जिला	**हिसार** (यहाँ सबसे अधिक धूप वाले दिन होते हैं)

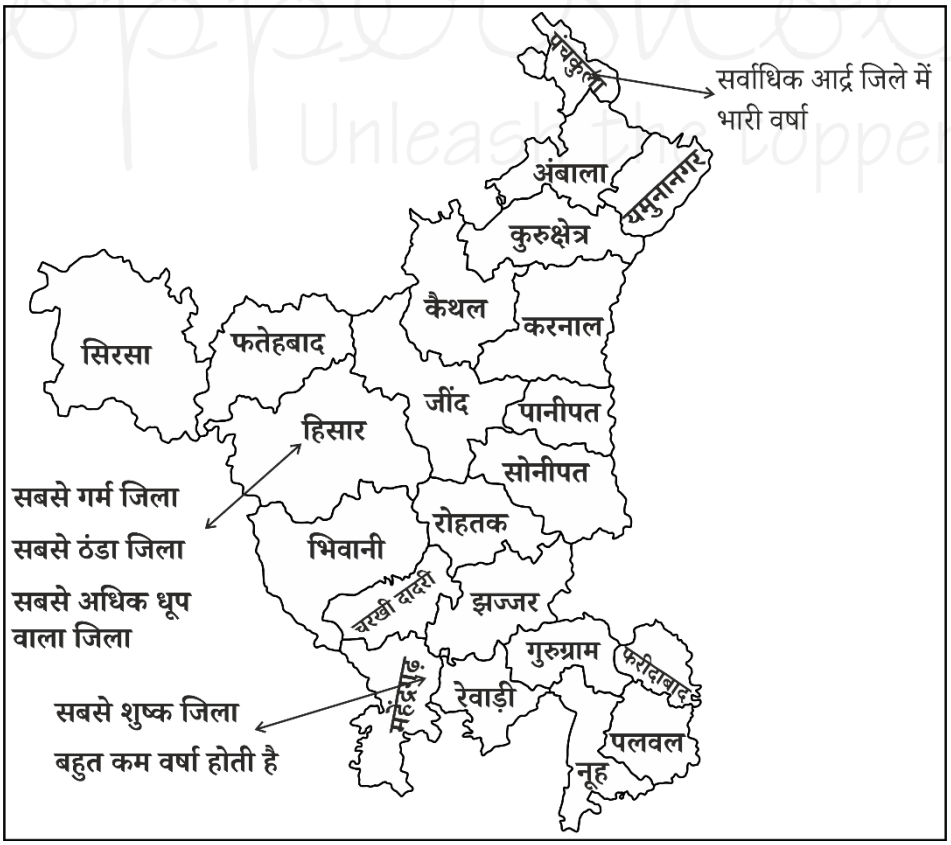

हरियाणा की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक

अक्षांश (Latitude)	हरियाणा, 27°39'N और 30°55'N के बीच स्थित है, जहाँ उप उष्णकटिबंधीय जलवायु पाई जाती है, जिसमें गर्मी के मौसम में तेज़ गर्मी और सर्दियों में हल्की ठंड रहती है।
ऊंचाई (Altitude)	समुद्र तल से 700-3600 फीट की ऊँचाई पर स्थित, हरियाणा के उत्तरी क्षेत्र (अंबाला और यमुनानगर) शिवालिक पहाड़ियों के पास अधिक वर्षा प्राप्त करते हैं, जबकि दक्षिणी भाग (सिरसा) समतल और अधिक शुष्क होता है।
मानसूनी हवाएँ (Monsoon Winds)	हरियाणा को दक्षिण-पश्चिम और दक्षिण-पूर्व मानसूनी हवाओं से वर्षा मिलती है। उत्तरी पहाड़ी क्षेत्रों में अधिक वर्षा होती है, जबकि दक्षिणी और पश्चिमी भाग शुष्क रहते हैं।
समुद्र से दूरी (Distance from the Sea)	हरियाणा समुद्र से दूर स्थित है, जिससे यहाँ अत्यधिक तापमान परिवर्तन होता है। गर्मियों में बहुत गर्मी और सर्दियों में कड़ाके की ठंड पड़ती है, क्योंकि समुद्री जलवायु का प्रभाव न्यूनतम रहता है।
हवा के पैटर्न (Wind Patterns)	यहाँ गर्मियों में थार रेगिस्तान से आने वाली गर्म, शुष्क हवाएँ चलती हैं, जिन्हें "लू" कहा जाता है। ये हवाएँ विशेष रूप से हिसार, सिरसा और फतेहाबाद जैसे पश्चिमी क्षेत्रों को प्रभावित करती हैं।
पश्चिमी विक्षोभ (Western Disturbances)	ये अतिरिक्त-उष्णकटिबंधीय तूफान भूमध्य सागर से उत्पन्न होकर सर्दियों में वर्षा लाते हैं, जो रबी फसलों की वृद्धि के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

हरियाणा की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक

हरियाणा की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक

अक्षांश

हरियाणा, 27°39'N और 30°55'N के बीच स्थित है, जहाँ उप उष्णकटिबंधीय जलवायु पाई जाती है, जिसमें गर्मी के मौसम में तेज़ गर्मी और सर्दियों में हल्की ठंड रहती है।

ऊंचाई

समुद्र तल से 700-3600 फीट की ऊँचाई पर स्थित, हरियाणा के उत्तरी क्षेत्र (अंबाला और यमुनानगर) शिवालिक पहाड़ियों के पास अधिक वर्षा प्राप्त करते हैं, जबकि दक्षिणी भाग (सिरसा) समतल और अधिक शुष्क होता है।

मानसूनी हवाएँ

हरियाणा को दक्षिण-पश्चिम और दक्षिण-पूर्व मानसूनी हवाओं से वर्षा मिलती है। उत्तरी पहाड़ी क्षेत्रों में अधिक वर्षा होती है, जबकि दक्षिणी और पश्चिमी भाग शुष्क रहते हैं।

समुद्र से दूरी

हरियाणा समुद्र से दूर स्थित है, जिससे यहाँ अत्यधिक तापमान परिवर्तन होता है। गर्मियों में बहुत गर्मी और सर्दियों में कड़ाके की ठंड पड़ती है, क्योंकि समुद्री जलवायु का प्रभाव न्यूनतम रहता है।

हवा के पैटर्न

यहाँ गर्मियों में थार रेगिस्तान से आने वाली गर्म, शुष्क हवाएँ चलती हैं, जिन्हें "लू" कहा जाता है। ये हवाएँ विशेष रूप से हिसार, सिरसा और फतेहाबाद जैसे पश्चिमी क्षेत्रों को प्रभावित करती हैं।

पश्चिमी विक्षोभ

ये अतिरिक्त-उष्णकटिबंधीय तूफान भूमध्य सागर से उत्पन्न होकर सर्दियों में वर्षा लाते हैं, जो रबी फसलों की वृद्धि के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

हरियाणा में ऋतुएँ

ऋतु	तापमान	मुख्य विशेषताएँ	वर्षा
गर्मी (मार्च से जून)	औसत: 35°C, अधिकतम: 40°C-48°C	➢ सबसे गर्म महीने: मई और जून ➢ सबसे गर्म जिला: हिसार ➢ दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम में गर्म हवाएँ (लू) चलती हैं	➢ कोई महत्वपूर्ण वर्षा नहीं
वर्षा (मानसून) (जून से मध्य सितंबर)	मध्यम, तापमान ठंडा करता है	➢ दक्षिण-पश्चिम मानसून और दक्षिण-पूर्व मानसून से वर्षा होती है ➢ **नोट:** अधिकांश वर्षा दक्षिण-पूर्व मानसून से होती है।	➢ औसत वर्षा: 40-60 सेमी ➢ सबसे अधिक वर्षा: उत्तर-पूर्वी भागों में (अंबाला, पंचकूला, यमुनानगर - 110 सेमी) ➢ सबसे कम वर्षा: दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र (लगभग 30 सेमी)
सर्दी (सितंबर से मार्च)	औसत: 12°C-14°C, न्यूनतम: 3°C - 4°C (दिसंबर-जनवरी)	➢ सबसे ठंडा महीना: जनवरी ➢ सबसे ठंडा जिला: हिसार	➢ पश्चिमी विक्षोभ (Western Disturbances) से हल्की वर्षा

क्या आप जानते हैं?

1. हरियाणा के उत्तरी शिवालिक क्षेत्र में सर्दियों के दौरान बेहद कम तापमान रहता है।
2. राज्य में सर्दियों महीनों (जनवरी से फरवरी) के दौरान पश्चिमी विक्षोभ, जिसे मऊठ के नाम से जाना जाता है, के कारण वर्षा होती है। इसका उद्गम फारस की खाड़ी से होता है।

हरियाणा में वर्षा

वर्षा की सीमा	30 से 110 सेमी
औसत वार्षिक वर्षा	लगभग 45 सेमी
अधिकांश क्षेत्रों में औसत वर्षा	40-60 सेमी
सबसे अधिक वर्षा वाला जिला	अंबाला हरियाणा में सर्वाधिक वर्षा प्रभावित क्षेत्र है, जहां प्रतिवर्ष औसत वर्षा 47.16 इंच है। पंचकूला में भी बहुत अधिक वर्षा होती है।
सबसे कम वर्षा वाले जिले	सिरसा, महेंद्रगढ़
सबसे अधिक वर्षा वाला स्थान	छछरौली, यमुनानगर जिला छछरौली को इसकी महत्वपूर्ण वर्षा के कारण "हरियाणा का चेरापूंजी" कहा जाता है।
सबसे कम वर्षा वाला स्थान	लोहारू, भिवानी जिला
सबसे अधिक वर्षा प्राप्त करने वाले क्षेत्र	हरियाणा का उत्तर-पूर्वी भाग (अंबाला, पंचकूला, यमुनानगर) में लगभग 100 सेमी वर्षा होती है। इसका कारण हिमालय की तलहटी के निकटता और मानसूनी हवाओं का प्रभाव है।
सबसे कम वर्षा प्राप्त करने वाले क्षेत्र	हरियाणा का दक्षिण-पश्चिमी भाग (सिरसा, महेंद्रगढ़) में वार्षिक वर्षा 25 से 38 सेमी के बीच। यह क्षेत्र राजस्थान के रेगिस्तान के करीब होने के कारण अधिक शुष्क रहता है।

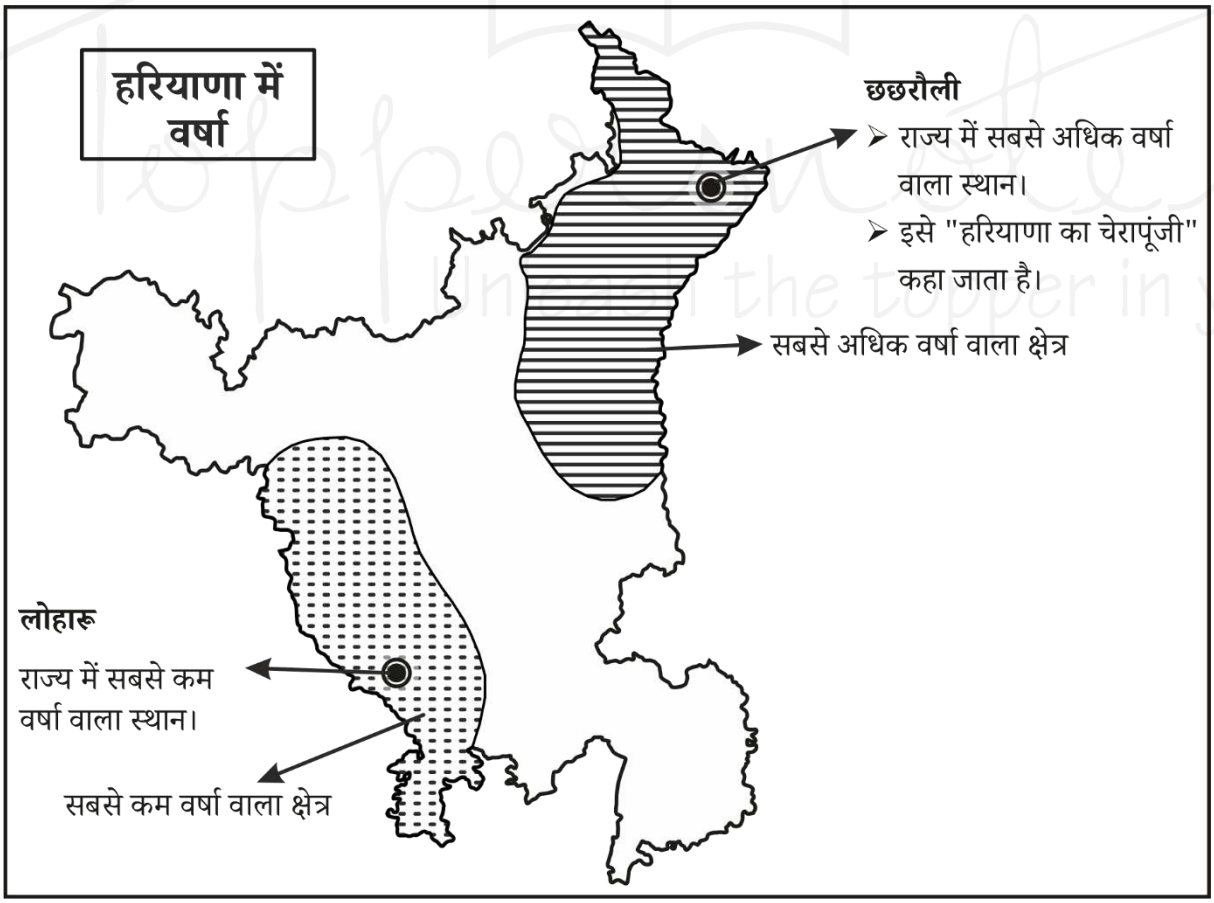

क्या आप जानते हैं?

राज्य में भड़लिया नवमी उत्सव वर्षा ऋतु के आगमन का प्रतीक है। यह मुख्यतः हरियाणा, राजस्थान और पंजाब के कुछ हिस्सों में मनाया जाता है। यह हिंदू कैलेंडर में भाद्रपद माह के नौवें दिन (नवमी) को पड़ता है, जो आमतौर पर अगस्त या सितंबर में होता है।

कोपेन जलवायु वर्गीकरण:

इस वर्गीकरण के अनुसार, हरियाणा में दो प्रकार की जलवायु पाई जाती हैं -

1. आर्द्र उपोष्णकटिबंधीय (शुष्क शीतकालीन) जलवायु
2. उपोष्णकटिबंधीय स्टेपी जलवायु (अर्ध-शुष्क जलवायु)

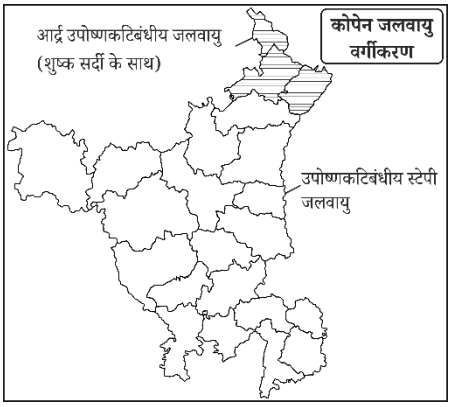

जलवायु प्रकार	**आर्द्र उपोष्णकटिबंधीय (शुष्क** शीतकालीन**)**	**उपोष्णकटिबंधीय स्टेपी (अर्ध-शुष्क)**
कोपेन कोड	Caw	Bsh
	C: गर्म जलवायु	B: शुष्क जलवायु
	w: शुष्क सर्दियाँ	s: स्टेपी (अर्ध-शुष्क)
	a: गर्म ग्रीष्मकाल	h: उच्च तापमान
ग्रीष्मकाल	गर्म और आर्द्र, तापमान 35°C - 40°C के आसपास	अत्यधिक गर्म और शुष्क, तापमान 40°C से अधिक
शीतकाल	शुष्क सर्दियाँ, तापमान 5°C - 15°C	शुष्क सर्दियाँ, तापमान 5°C - 15°C
वर्षा	मध्यम वर्षा (70-90 सेमी), मुख्यतः मानसून के दौरान	कम वर्षा (40-60 सेमी), मुख्यतः मानसून के दौरान
क्षेत्र	हरियाणा का उत्तर-पूर्वी भाग - अंबाला, पंचकूला और यमुनानगर	हरियाणा के शेष भाग में पाई जाती है
	(मुख्यतः शिवालिक पर्वतमाला के पास 72 किमी चौड़ी समतल पट्टी में)	

वर्तमान में **हरियाणा** जलवायु परिवर्तन के कारण गंभीर प्रभावों का सामना कर रहा है, जो उसकी **कृषि अर्थव्यवस्था और समग्र विकास** के लिए एक बड़ा खतरा है। **बढ़ते तापमान** और **लगातार आने वाली गर्म हवाएँ** मानव स्वास्थ्य और कृषि उत्पादकता को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रहे हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए **समग्र जलवायु कार्रवाई योजनाएं** आवश्यक हैं, जो **हरियाणा के पर्यावरण और अर्थव्यवस्था की स्थिरता और अनुकूलन क्षमता** को बढ़ाने में मदद कर सकती हैं।